NEWSLETTER

GOLD : 51950
SILVER : 58182
CRUD OIL : 8591

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates.

02/07/2022

जानिए देश में क्या है कॉटन सोइंग की वर्तमान स्थिति

टेक्सटाइल इंडस्ट्री में इनदिनों का एक अहम मुद्दा है कॉटन सोइंग। क्योंकि इसी के आधार पर आने वाले साल का बिजनेस निर्भर करेगा। अप्रैल महीने के अंत से ही सोइंग आंकड़ों को लेकर चर्चा शुरू हो चुकी है। पहले लगभग सभी प्रदेशों ने कॉटन सोइंग रकबा बढ़ाने की बात कही लेकिन जून खत्म होने तक स्थिति यह बनी कि रकबा बढ़ने की जगह घट गया। आइए जानते है वर्तमान में क्या है देश में कॉटन सोइंग की स्थिति-

COTTON SOWING as on 01/07/2022

(Lakh Hectare) SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775

STATE	2022-2023	2021-2022	ONE YEAR CHANGE	CHANGE %
PUNJAB	2.480	2.541	-0.061	-2.40
HARYANA	6.505	6.745	-0.240	-3.56
RAJASTHAN	5.565	5.365	0.200	3.73
NORTH ZONE	**14.550**	**14.651**	**-0.101**	**-0.69**
GUJARAT	10.859	11.461	-0.602	-5.25
MAHARASHTRA	23.647	19.586	4.061	20.73
MADHYA PRADESH	1.800	3.340	-1.540	-46.11
CENTRAL ZONE	**36.306**	**34.387**	**1.919**	**5.58**
ANDHRA PRADESH	0.600	0.390	0.210	53.85
TELANGANA	9.209	10.070	-0.861	-8.55
KARNATAKA	2.889	1.647	1.242	75.41
TAMILNADU	-	0.003	-0.003	-100.00
SOUTH ZONE	**12.698**	**12.110**	**0.588**	**4.86**
ODISHA	0.263	0.285	-0.022	-7.72
OTHER	0.260	0.299	-0.039	-13.04
GRAND TOTAL	**64.077**	**61.732**	**2.345**	**3.80**

SOURCE : MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE

नॉर्थ जोन

पिछले साल गुलाबी सुंडी रोग से फसल को जो नुकसान हुआ है उसका भय इस साल भी किसानों में नजर आ रहा है। नतीजा यह कि साल **2021-22** में जून महीने के अंत में**14.651** लाख हेक्टेयर में कपास की बुआई की गई थी जबकि साल **2022-23** में यह केवल **14.550** लाख हेक्टेयर पर ही सिमट गई।

सेंटल जोन

सेंटल जोन में कुल सोइंग में **1.919** लाख हेक्टेयर का इजाफा हुआ है। इसमें मुख्य भूमिका महाराष्ट ने निभाई हैं। साल **2021-22** में इस समय तक सेंटल जोन में कुल सोइंग **34.387** लाख हेक्टेयर हुई थी जबकि साल **2022-23** में **36.306** लाख हेक्टेयर भूमि पर कपास की बुआई की गई है।

साउथ जोन

आंधप्रदेश में सोइंग में **0.210** लाख हेक्टेयर का इजाफा हुआ जबकि तेलंगाना में **0.861** लाख हेक्टेयर रकबे की कमी दर्ज की गई। कर्नाटका में **1.242** लाख हेक्टेयर ज्यादा भूमि पर कपास की सोइंग की गई। तमिलनाडू में अब तक सोइंग का श्रीगणेश ही नहीं हुआ है। पिछले साल की तुलना में साउथ जोन में कुल **0.588** लाख हेक्टेयर भूमि का इजाफा हुआ है।

तीनों जोन के अलावा उड़िसा और अन्य राज्यों में भी सोइंग पिछले साल की तुलना में कम ही देखी गई। देश में कुल इस समय तक साल **2021-22** तक **61.732** लाख हेक्टेयर भूमि पर कपास की सोइंग की गई थी जबकि इस साल **64.077** लाख हेक्टेयर भूमि पर कपास बोया गया है। (सभी आंकड़े मिनिस्टी ऑफ एग्रीकल्चर एंड फॉमर्स वेलफेयर द्वारा जारी रिपोर्ट पर आधारित)

साल-दर-साल दम तोड़ रही यूपी की टेक्सटाइल इंडस्ट्री

हाथरस के कॉटन ट्रेडर श्रवण कुमार अग्रवाल से एसआईएस की खास बातचीत

पूरे देश में टेक्सटाइल इंडस्ट्री को बढ़ावा दिया जा रहा है लेकिन यूपी में साल-दर-साल यह इंडस्ट्री दम तोडती जा रही है। कॉटन की पैदावार हो या जिनिंग और स्पिनिंग मिल्स की यूनिट लगाने की बात, यहां स्थिति देश से विपरित ही है। हाथरस जैसे कॉटन ग्रोइंग स्टेशन में ही हर साल कपास का रकबा लगभग 10 प्रतिशत तक कम होता जा रहा है। वहीं कुछ साल पहले तक कानपूर और हाथरस यूपी के कॉटन हब कहलाते थे जबकि अब यहां एक भी मिल का असतित्व नहीं है। देश के सबसे बड़े स्टेट में देश की दूसरी सबसे बड़ी इंडस्ट्री का ये हर्श जिम्मेदारों के लिए सोचने का विषय है।

महंगी है लेबर कॉस्ट

कॉटन और टेक्सटाइल इंडस्ट्री के विषय में यह चिंता व्यक्त की यूपी के हाथरस इलाके के कॉटन ट्रेडर श्रवण कुमार अग्रवाल ने। श्रवण ने बताया कि कॉटन इंडस्ट्री में जबरदस्त स्कोप है लेकिन यूपी में नहीं। दरअसल कपास फसल की कटाई के लिए लेबर की बहुत आवश्यकता होती है और यूपी में लेबर कॉस्ट बहुत महंगी है। इसलिए किसान कपास की जगह मक्का और बाजरा की खेती को तवज्जो दे रहे है। वहीं दूसरी ओर जिनिंग और स्पिनिंग मिल्स लगाना एक बहुत बड़ा इनवेस्टमेंट होता है जिसके लिए सरकार की तरफ से कोई मदद उपलब्ध नहीं है। यही वजह है कि यूपी में इस इंडस्ट्री का फयूचर खतरे में नजर आ रहा है।

सरकार से मदद की आस

उन्होंने कहा कि यूपी बेल्ट का हाथरस इलाका देशी कॉटन की पैदावार के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। यहां औसतन हर साल 8 से 10 हजार कॉटन बेल्स की प्रेसिंग होती है जबकि पूरे यूपी में लगभग 50 लाख बेल्स के लगभग बेल्स की प्रेसिंग होती है। सरकार चाहे तो इस दम तोड़ती इंडस्ट्री को बचा सकती है। जरूरत है तो केवल कुछ आसान नीतियां बनाने की। ऐसी नीतियां जिससे लेबर कॉस्ट और इंडस्टी कॉस्ट को कम करने में मदद मिलें।